महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन से निष्पन्न शांति एवं सदभाव की शिक्षा

डॉ. सीतारामभाई पी. देशमुख
प्रोफेसर,
शिक्षण विद्याशाखा(IASE) गूजरात विद्यापीठ,अहमदाबाद, भारत

1. प्रस्तावना

महात्मा गांधी एक ऐसे दार्शनिकथे किवह न केवल राष्ट्र में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुए। विश्व के शिक्षाशास्त्रीयों मेंउन्का एक अग्रगण्य स्थान रहा है। वह सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे औरराष्ट्र के लिए अपनी अमूल्य भेंट समान बुनियादी शिक्षा के वह जन्मदाता एवं प्रवर्तक थे। उन्के शिक्षा संबंधी विचारों ने सारे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है, इस लिए कि उन्के शिक्षा-दर्शन में आज सारा विश्व वर्तमान संकटों का समाधान देख रहा है।

आज सारा विश्व सामाजिक, सांस्कृतिक,आर्थिक और राजनीतिक संकटों के दुष्प्रभाव से ग्रस्त है। विज्ञान एवं तकनीकी ने मानव जीवन की समस्याँओं को सुलझाने का संभवतः प्रयास किया हैं, किन्तु कुछ समस्याँओं को सुलझाने के प्रयास में सामाजिक असंतुलनका बड़ा संकट खडा कर दिया है। इन सारे संकटों का समाधान ढूँढने केलिएसंयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर विश्व के सभीराष्ट्रों, प्रांत-प्रदेश एवं स्थानिक स्तर पर विभिन्न समूह-संगठनों अपने ढंग से इस दिशा में सक्रिय रूपसे कार्य कर रहे है। ऐसी परिस्थितियों में महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शनही एक ऐसी जड़ी है, जिससे कि सारे संकटों का समाधान निकल सकता है। महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में मनुष्य जीवन का समग्र दृष्टिकोण देखने मिलता है। याने कि उनके शिक्षा-दर्शन औरजिवन-दर्शन के बिच परस्पर घनिष्ठ संबंध देखने मिलता है। उन्होंने मानव संस्कृति और जिवन-दर्शन के साथ शिक्षा-दर्शन का ऐसा मेलजोल किया हैं, कि दोनों दर्शन एक दूसरों के कदम से कदम मिलाकर चलते है।उन्होंनेजीवन एवं जीवन जीने की शैली के रूप में शिक्षा का विकास करके संकुचित शिक्षा का स्वरूप ही बदल डाला था।वह एक ओर बुद्धि, मन, वचन और कर्म में एकरूपता देखते थे, तो दूसरी ओर जीवन की विभिन्न समस्याओं को एक-दूसरे से जुडा हुआ देखते थे। उन्होंने मानव जाती के लिए एक ऐसा शिक्षा-दर्शन दिया है, जिसमें स्वाभाविक रूपसे **शांति एवं सदभाव** निहित है।

2. समस्याकथन

प्रस्तुत अभ्यास में महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन से निष्पन्न '**शांति एवं सदभाव'** की शिक्षाविषय पर अध्ययन करने हेतु सत्यमूर्ति(1999) 'महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन', कमला द्विवेदी(1986) 'गांधीजी का शिक्षादर्शन', मगनभाई पटेल(1999)'गांधीजीनुं शिक्षण दर्शन' एमनाज शब्दोंमां'पुस्तकों में व्यक्त महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन संबंधी विचारों से निष्पन्न **'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा के पहलुओं को विश्लेषित करनेका प्रयास किया गया है।

3. शब्दों की व्यवहारु परिभाषा

महात्मा गांधी:जिन्का जन्म 2 , अक्तुबर1869 को पोरबंदर में माता पुतलीबाई और पिता करमचंद गांधी के घर हुआ था, वह मोहनदास करमचंद गांधी एवं हमारे राष्ट्रपिता 'महात्मा गांधी'।

शिक्षा-दर्शन:शिक्षा संबंधी गांधीजी का चिंतनएवं उन्के विचारों को प्रस्तुत अभ्यास मेंशिक्षा-दर्शन के रूपमें लिया गया है।

निष्पन्न:किसी विचार या चिंतन से उत्पन्न या जन्मा हुआ। आज्ञा, आदेश, नियम, बोध आदी से फलित ऐसा अर्थ होता है।

गांधीजी ने अपने शिक्षा-दर्शनमें शिक्षा संबंधी विचोरों को प्रकट करते हुएऐसी कई बाबतों की ओर दिशा-निर्देश किया है, जिसमें **'शांति एवं सदभाव '**का भाव महसूस होता है। प्रस्तुत अभ्यास में **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** को महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन की उपज याने कि निष्पन्न हुईबाबत, परिणाम या फलश्रुतिके रूपमेंलिया गया है।

शांति: शांतियाने मन की स्थिरता, सांत्वना, धीरज, चैन, संतोष आदि अर्थ होतेंहै। प्रस्तुत अभ्यास में **'शांति'** को ऐसी मानसिक अवस्था के रूपमें लिया गया है, जिसमें तृप्ति, संतुष्टि, आनंद एवं हर्षआदिका भाव महसूस होता हो।

सदभाव: प्रस्तुत अभ्यास में **'सदभाव'** को शुभ एवं अच्छा भाव या विचार, हित की भावना, मैत्रीपूर्ण स्थितिके रूपमें लिया गया है।

शिक्षा: प्रस्तुत अभ्यास में **'शिक्षा'** को विद्या, ज्ञान, तालीम, चारित्रिक और मानसिक शक्तियों का विकास के रूपमें लिया गया है।

4. अभ्यास के उद्देश्य

1. महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन मेंनिहित**'शांति एवं सदभाव'**संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन से निष्पन्न **'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा को व्याख्यायित करना।

5. अभ्यास के प्रश्नों

1. महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में**'शांति'**संबंधी कौन कौनसे विचार व्यक्त किए गए है?
2. महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में**'सदभाव'**संबंधी कौन कौनसे विचार व्यक्त किए गए है?

6. अभ्यास की इकाई

प्रस्तुत अभ्यास में महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन के संदर्भ में चयन किए गए पुस्कों में निहित **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** संबंधी विचारों को अभ्यास की इकाई के रूपमें लिया गया है।

7. निदर्श का चयन

प्रस्तुत अभ्यास में सत्यमूर्ति(1999) 'महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन', कमला द्विवेदी(1986) 'गांधीजी का शिक्षादर्शन', मगनभाई पटेल(1999)'गांधीजीनुं शिक्षण दर्शन' एमनाज शब्दोंमां'पुस्तकों का'अनुकूल निदर्श' पद्धति से निदर्श के रूप में चयन किया गयाथा।

8. पुस्तकों का अध्ययन

प्रस्तुत अभ्यास के लिए निदर्श के रूपमें चयन किए गए तीनों पुस्तकों का अभ्यास के उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर अध्ययन किया गया था। जिसमें प्रमुख रूपसे महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में निहित **'शांति एवं सदभाव'**संबंधी विचारों का गहनता से अध्ययन किया गया था।

9. महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन मेंनिहित'शांति एवं सदभाव'संबंधी विचारों का वर्गीकरण

निदर्श के रूपमें चयन किए गए तीनों पुस्तकों का प्रस्तुत अभ्यास के उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर अध्ययन करने से प्राप्तमहात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन मेंनिहित**'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** संबंधीविचारों का वर्गीकरण निम्नांकित प्रकार से किया गया है।

9.1 शिक्षा के उद्देश्यों में निहित ' शांति एवं सदभाव की शिक्षा' संबंधी विचारों

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में 'शिक्षा के उद्देश्यों' कोदेखें तोलोकतन्त्रीय समज की स्थापना, नागरिकता के गुणों का विकास, नैतिक विकास एवं चारित्र्य निर्माण, सर्वोत्तम तत्त्वों का प्रकटीकरण, सांस्कृतिक विकास, चित्तशुद्धि, स्वराज, जीविकोपार्जन एवं आर्थिक उन्नति,मुक्ति,आत्मविकास एवं आत्मदर्शन आदि उद्देश्यों में **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निहित है।

9.2 शिक्षा कीसंकल्पनाओं में निहित' शांति एवं सदभाव की शिक्षा' संबंधी विचारों

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन संबंधी निम्नांकित संकल्पनाओं में निहित **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** के विचारोंपाए गएहै।

- शिक्षा से बालक के मन, शरीर एवं आत्मा में निहित सर्वश्रेष्ठ तत्त्वों का विकास करके बाहर लाना है।
- सच्ची शिक्षा वह है, जो बालकों की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं उत्तेजित करती हो।
- शिक्षा से सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं बल्कि हमारे अधिकार एवं कर्तव्यों की सही समज प्राप्त करना है।
- सच्ची शिक्षा वह है, जिससे कि चारित्र्य का निर्माण हो सके।
- किसी उपयोगी हाथ उद्योग द्वारा बुद्धि का विकास होना चाहिए।
- सत्याग्रह सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम शिक्षा है।
- सही शिक्षा याने स्वाभिमान।सही शिक्षा याने सम्यक दृष्टि का विकास।
- सही शिक्षा वातावरण में, आसपास की स्थिति में, सोबतों में एवं मूलरूप से कर्म में ही निहित है।

9.3 शिक्षा के सिद्धांतों में निहित 'शांति एवं सदभाव की शिक्षा' संबंधी विचारों

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में 'शिक्षा के सिद्धांतों' को देखें तोउद्योग द्वार शिक्षा , समवायी शिक्षाऔरशिक्षा में स्वावलम्बन आदि सिद्धांतों में **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निहित है।

9.4 शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में निहित ' शांति एवं सदभाव की शिक्षा' संबंधी विचारों

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में 'शिक्षा के अन्य क्षेत्रों' को देखें तो सर्वधर्म समभाव की शिक्षा, प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा, कलाओं की शिक्षा, स्त्री-शिक्षा,सहशिक्षण और छात्रावास एवं समूहजीवन आदि क्षेत्रों में **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निहित पाई गई है।

10. विषयवस्तु का विशलेषण और अर्थघटन

प्रस्तुत अभ्यास मेंनिदर्श के रूपमें चयन किए गए तीनों पुस्तकों में से महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन संबंधी शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षा की संकल्पनाएँ, शिक्षा के सिद्धांतों और शिक्षा के अन्य क्षेत्रोंके संबंध में व्यक्त शिक्षा संबंधी विचारों मेंनिहित **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** केविचारों का वर्गीकरण करने के पश्चात विषयवस्तु का विशलेषण करके प्रस्तुत अभ्यास के उद्देश्यों के संदर्भ में यहाँअर्थघटन किया गया है।

10.1 शिक्षा के उद्देश्यों से निष्पन्न शांति एवं सदभाव की शिक्षा'

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में लोकतन्त्रीय समज की स्थापना, नागरिकता के गुणों का विकास, नैतिक विकास एवं चारित्र्य निर्माण, सर्वोत्तम तत्त्वों का प्रकटीकरण,जीविकोपार्जन एवं आर्थिक उन्नति, मुक्ति, आत्मविकास एवं आत्मदर्शन आदि उद्देश्यों से **निष्पन्न'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** को यहाँ व्याख्यायित किया गया है।

10.1.1 लोकतंत्रीय समाज की स्थापना

महात्मा गांधी ने बताय है कि 'यदि सामाजिक जीवन को प्रजातंत्र के अनुसार संगठित किया जाना है, तो उसकी आधारशिला शारीरिक श्रम तथा उत्पादक कार्यों पर डाली जाए।' आज ऐसे समाजोपयोगी नागरिकों की आवश्यकता है, जो अपने दायित्वको सफलतापूर्वक निभा सके तथा समाज सहयोगी कार्यों में भाग लेकर लोकतंत्रीय समाज की उन्नति के लिए कार्य कर सकें। इस दृष्टिकोण से समाज उपयोगी नागरिकों का निर्माण गांधी की बुनीयादी शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है, जिससे समाज में **'शांति एवं सदभाव'** की नींव रखी जा सकती है।

10.1.2 नागरिकता के गुणों का विकास

गांधी की बुनीयादी शिक्षा में इस तथ्यों की ओर पूरा ध्यान दिया गया है, कि व्यक्ति में नागरिकता के गुणों का विकास हो। इस विषय में जाकिर हुसैन समिति ने लिखा है, कि 'नागरिकता के गुण सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में ही पनपते है।' 'यह बेसिक शिक्षा की नवीन योजना भावि नागरिकों में आदर और कुशलता का भाव विकसित करेगी और आत्मविश्वास तथा सहयोगी समाज में समाज सेवा के लिए आवश्यक तीव्र इच्छा को दृढ़ बनाएगी।' जिससे **'शांति एवं सदभाव'** पनपते है।

10.1. 3 नैतिक विकास एवं चारित्र्य निर्माण

महात्मा गांधीने अपनी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश व्यक्ति में नैतिकता का विकास करना बताया है। उन्हों ने अपनी आत्मकथा में स्पष्ट लिखा है, कि 'मैंने ह्रदय की संस्कृति या चरित्र के निर्माण को सदैव प्रथम स्थान दिया है।' एक बार उनसे पूछा गया कि जब भारत स्वतंत्र हो जाएगा तब आपकी शिक्षा का क्या लक्ष्य होगा। उन्होंने फौरन ही उत्तर दिया 'चरित्र-निर्माण। अर्थात समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र का निर्माण करना होना चाहिए। व्यक्तिगत पवित्रता समस्त चरित्र-निर्माण का आधार होना चाहिए। चरित्र के बिना 'शिक्षा' और पवित्रता के बिना 'चरित्र' व्यर्थ है। पवित्रता वह है जिसमें व्यक्ति की वांच्छित वृत्तिओं की अपेक्षा की जाती है, जिससे **'शांति एवं सदभाव'** की अपने आप निर्मित होता है।

10.1.4 सर्वोत्तम तत्त्वों का प्रकटीकरण

महात्मा गांधीने अपने शिक्षा-दर्शन में शैक्षिक उद्देश्य को लेकर बताया है, कि हमारी शिक्षा सर्वोत्तम तत्त्वों का विकास करने वाली हो। शिक्षा पाकर हमारे नागरिक दार्शनिक हों, वैज्ञानिक हों, शिल्पकार हों, चित्रकार हों, नीतिवान हों और चारित्र्यवान हों तथा देशभक्ति और विश्वबंधुत्व की कामना से ओतप्रोत हों आदि सर्वोत्तम तत्त्वों के प्रकटीकरण करने पर बल जताया है। जिससे कि राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण होगा, जिसमें स्वतः **'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा निहित है।

10.1.5 जीविकोपार्जन एवं आर्थिक उन्नति

इस उद्देश्य का अर्थ यह है, कि शिक्षा बालक के बड़े होने पर जीविकोपार्जन के योग्य बनाए। यदि शिक्षा यह कार्य नहीं करती हैं तो वह व्यर्थ है। यदि वह भोजन, वस्त्र और मकान की मूल आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती हैं तो वह निरर्थक है। इस उद्देश्य से उन्हों ने स्पष्ट किया है, कि समाज की अधिकांश समस्याएँ मूल आवश्यकताओं को लेकर ही देखने मिलती है, जो हम जीविकोपार्जन की शिक्षा से सुलझा सकते है। यहाँ गांधी ने जीविकोपार्जन के द्वार बालक को प्रारंभ से ही **'शांति एवं सदभाव'** की ओर ले जाने का निर्देश किया है। महात्मा गांधी ने18 सितंबर 1937 के 'हरिजन' में लिखा है, कि 'यदि शिक्षा को अनिवार्य बनाना है, तो भारत के ग्रामों की आवश्यकताओं को देखते हुए हमें अपनी ग्रामीण शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए।' बेसिक शिक्षा में 1. बच्चों द्वारा बनाई गई वस्तुओं से विद्यालय के व्यय की आंशिक पूर्ति करना है। 2. बेसिक शिक्षा समाप्त करने के पश्चात बालकों का बड़े होकर किसी उद्योग द्वारा अपनी जीविका को चलाना है। गांधीजी का विचार था कि बालक जबविद्यालय को छोड़ें तो वह अपनी जीविका कमाने के योग्य हो, अर्थात वह समाज की कमाने वाली इकाई के रूप में हो, ताकि समाज में बेरोजगार की समस्या खड़ी न हो। जिससेसमाज में **'शांति एवं सदभाव'** का भावावरण का निर्माण हो सके।

10.1.6 मुक्ति

गांधीजी के अनुसार शिक्षा का एक मुख्य उद्देश व्यक्ति की मुक्ति है। 'सा विद्या या विमुक्तए' अर्थात शिक्षा या विद्या वही हैं, जो मुक्त करती है। उनके अनुसार मुक्ति का एक अर्थ है, वर्तमान जीवन में जब तक मनुष्य किसी भी प्रकार की दासता में बँधा हुआ है, तब तक उसकी प्रगति असंभव है। अतः शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सभी प्रकार की दासता से मुक्त करना है।'दूसरा अर्थ है, शिक्षा के द्वारा सांसारिक बंधनों से आत्मा की मुक्ति। याने आत्मा को ऊर्ध्व जीवन की ओर उठाना है, जिससे कि व्यक्ति को परमशांति मिल सके।

10.1.7 आत्मविकास एवं आत्मदर्शन

गांधीजी के अनुसारशिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य हैं, 'अंतिम वास्तविकता का अनुभव, ईश्वर और आत्मानुभूति का ज्ञान।' गांधीजी आत्मानुभूति को जीवन और शिक्षा का सर्वोत्तम कार्य मानते है। जिससे कि वह अंतिम वास्तविकता को जान सके और अपने नश्वर शरीर को अनश्वर शरीर का भाग बना सके। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, कि 'टॉलस्टॉय फार्म पर बालकों को शिक्षा देने का कार्य करने से पहले मुझे इस बात का ज्ञान हो गया था कि आत्मा का प्रशिक्षण संयम एक महान कार्य है। आत्मा का विकास करना चरित्र का निर्माण करना है, व्यक्ति को आत्मानुभूति के लिए कार्य करने के योग्य बनाना है।' महात्मा गांधी की इस परिकल्पना में **'शांति एवं सदभाव'** निहित है।

10.2 शिक्षा की संकल्पनाओं से निष्पन्न' शांति एवं सदभाव की शिक्षा'

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में शिक्षा की भिन्न भिन्न संकल्पनाओं से निष्पन्न **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** को यहाँ व्याख्यायित किया गया है। महात्मा गांधी नेशिक्षा का अर्थनिर्धारित करते हुए लिखा है कि 'बालक के मन, शरीर और आत्मा में निहित सर्वश्रेष्ठ तत्त्वों का विकास करके बाहर लाना है।' शिक्षा से उन्का अभिप्राय है, 'बालक और मनुष्य के मस्तिष्क, शरीर और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास करना है।' महात्मा गांधी स्पष्ट रूपसे मानते थे कि सच्ची शिक्षा वह है, जो बालकों की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं उत्तेजित करती हो। वह मानते थे कि शरीर, मन और आत्मा जिस विद्या से विकसित और परिपृष्ठ होती है वही वास्तविक शिक्षा है। जिससे कि मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, आत्मिक, आध्यात्मिक और शास्त्रीय आदि प्रकार के सद्गुणों का विकास होना चाहिए। महात्मा गांधी के उपरोक्त शिक्षा का उद्देश्य एवं शैक्षिक विचारों से स्पष्ट है, कि मनुष्य के सर्वोतोमुखी विकास में **'शांति एवं सदभाव'** अपने आप सहज रूप से निहित है। UNOने अपने चार्टर में लिखा है, कि 'युद्ध का मूल मनुष्य का मन है।' याने की जहाँ तक मनुष्य के मस्तिष्क का सर्वोतोमुखी एवं वांछित विकास नहीं होगा वहाँ तक मनुष्य के मन में **शांति** के बीज का स्फुरण नहीं हो पाएगा।

इस प्रकार महात्मा गांधी की शिक्षा कामूल उद्देश्य, मन एवं मस्तिष्क के विकास से शिशु, बालक एवं मनुष्य में **शांति का भाव** प्रस्थापित करने का रहा है। याने कि महात्मा गांधी के शिक्षा के उद्देश्य में **शांति का भाव** निहित है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के संबंध में बताय है, कि शिक्षा से सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं बल्कि हमारे अधिकार एवं कर्तव्यों की सही समज प्राप्त करना है।याने कि बालक को केवल साक्षर करना, उसके मस्तिष्क कोसूचनाओं से भर देना तथा परीक्षात्तीर्णता का लक्ष्य मात्र नहीं है,

बल्कि बालक के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास करना है। ताकि वह पूर्ण मनुष्य एवं उपयोगी नागरिक बन सके। परिणाम स्वरूप वह हमारे अधिकार एवं कर्तव्यों को भली-भांति समज समजकरसमाज के लिए उपयोगी बन सके। जो **'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा का ही एक स्वरूप है। महात्मा गांधीने शिक्षा से चारित्र्य निर्माण पर अधिक बल दिया है। शिक्षा की फलश्रृति के रूप में मनुष्य नीतिवान हों और सच्चरित्र हों तथा देशभक्ति और विश्वबंधुत्व की कामना से ओतप्रोत बनने की अपेक्षा की है। यह तब संभव हो सकता है जब की मनुष्य में नैतिकता एवं चारित्र्य, बंधुता, मैत्री आदि **शुभ भावों** का आविष्कार हो। इन भावों का आविष्कार मनुष्य को **सदभाव** की ओर ले चलता है।याने कि महात्मा गांधी के शिक्षा–दर्शन में **सदभाव का भाव** निहित है। महात्मा गांधीने अपने शैक्षिक विचारों के जरिए नागरिकों में देशभक्ति और विश्वबंधुत्व का विकास करने पर अधिक बल जताया था। जो **'शांति एवं सदभाव'** के द्योतक है। तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति को संभालने के लिए उन्हों ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति और विश्वबंधुत्व का संचार करने का विनम्र प्रयास किया था, जिसमें उनको सफता भी हाँसिल हुई थी। परिणाम स्वरूप एक ओर राष्ट्र में **शांतिपूर्ण वातावरण** बनाए रखने का हर संभव प्रयास किया गया था, तो दूसरी ओर अंग्रेज शासन के साथ **सदभावपूर्ण भावावरण**का निर्माण किया गया था,परिणाम स्वरूप वह कभी विचलित नहीं हुए थे।

कोमी हुल्लडों के दौरान महात्मा गांधी ने **'शांति एवं सदभाव'** पर अपनी अतूट आस्था रखकरनिर्भयता से अपने साथीयों को लोगों के बिच भेजा था, और वह स्वयं भी **शांतिसैनिक** के तौर पर नोआखली के गाँवों में नंगे पाँव पैदल चल कर **शांति** स्थापित करने का चमत्कारी एवं क्रांतिकारी कार्य किया था।जिससे प्रभावित होकर तत्कालीन वाईसरोय माउन्टबेटन को यह कहेने को मजबूर होना पडा था कि 'हमारी 5500 की अंग्रेज सेना पंजाब में जो काम नहीं कर पाई वह काम इस 'वन मेन आर्मी' (महात्मा गांधी) अकेले की सेना ने कर दिखाया है।' परिणाम स्वरूप अंग्रेजसरकार की ओर से महात्मा गांधी को पंजाब में आनेका निमंत्रण दिया गया था। यह **'शांति एवं सदभाव'** का ही प्रभावथा, जो कि महात्मा गांधी की शिक्षा में निहित है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा का आरंभ किसी उपयोगी हाथ उद्योग सीखाकर हो और उद्योग द्वारा बुद्धि का विकास करने की बात पर बल दिया है। इस संबंध में उन्हों ने बताया है, कि जिस व्यक्ति को उपयोगी हाथ उद्योग की शिक्षा प्राप्त हुई है, वह अपने शरीर पर अंकुश रख शकता है, उसे सोंपे गए कार्यों को सरलता से निपटा सकता है, उनकी बुद्धि शुद्ध, शांत एवं न्यायदर्शी होती है, उनका मन कुदरत के कानून से भरा होता है, वह निम्न आचरणों को धिक्कारता है।उपयोगी हाथ उद्योग की इसतालीम में **'शांति एवं सदभाव'** निहित है। सत्य के पुजारी महात्मा गांधी ने सत्याग्रह को सर्वोत्कृष्ट और सर्वोत्तम शिक्षा कही है। इस संबंध में उन्हों ने स्पष्ट किया है, कि जीवन-कलह में द्वेष को प्रेम से और असत्य को सत्य से और बलात्कार को सहनशीलता से जीत सकते है।याने की प्रेम, सत्य और सहनशीलता ऐसा साधन है जिससे हम हम सहजता से अपने शत्रु को मित्र और पराया को अपना बना सकते है।जिससे हमारे दिलों-दिमांग में 'शांति एवं सदभावपूर्ण' भावावरण का निर्माण होता हैं, जिससे कि **'शांति एवं सदभाव'**को प्रस्थापित करना संभव बन पाता है। शिक्षा याने 'स्वाभिमान'। स्वाभिमान से तात्पर्य है, शिक्षा से व्यक्ति आजीविका प्राप्त कर सके और समाज में स्वमान से अपना जीवन-यापन कर सके। आजीविका का सीधा संबंध उद्योग से है।याने उद्योग व्यक्ति को स्वाभिमानी बनाकर सदवृत्तिओं की ओर ले चलता है। परिणाम स्वरूप व्यक्ति समाज में **'शांति एवं सदभाव'** का भावावरण निर्माण करने के लिए प्रेरित होता है।

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन से स्पष्ट हैकि शिक्षा याने सम्यक दृष्टि का विकास। समाज में हर काम का समान महत्त्व है। किसी को आवश्यक्ता से अधिक संग्रह न करना चाहिए और न तो किसी भी आधार पर भेद करना चाहिए। इससम्यक दृष्टिसे हर व्यक्ति अपनी क्षमता और रूचि के अनुसार कार्य करेगा तो अमीरी-गरीबी का भेद नष्ट हो जाएगा और समाज में समानता की स्थापना हो सकेगी। परिणामतः समाज में संघर्ष दूर होगा और सहयोग एवं मैत्रि की भावना का विस्तार होगा। जिससे शांति एवं सदभाव को बल मिलेगा। महात्मा गांधी की दृष्टि से सही शिक्षा वातावरण में, आसपास की स्थिति में, सोबतों में जिसमें कि हम न जानते हुए भी आदतों को ग्रहण करते है, उसमें एवं मूलरूप से कर्म में ही 'सही शिक्षा' निहित है। एरिस्टोटल ने कहा है, कि बड़ी बड़ी किताबे पढ़ लेने से नहीं बल्कि सत्कर्म से सद्गुणों का विकास होता है। महात्मा गांधी ने सही शिक्षा को कर्म में निहित होने की बात बताकर सत्कर्मों करने की ओर निर्देश किया है, जैसे निस्वार्थ सेवा, परस्पर सहयोग आदि सत्कर्मों है,जिससे व्यक्तियों के बिच ऐसे भावावरण

का निर्माण होता है जिससे कि व्यक्ति में सद्‌गुणों और 'शांति एवं सदभाव'संबंधी भावों को निर्माण होता है। इस दृष्टि से देखें तो **'शांति एवं सदभाव'** सत्कर्मों में ही निहित है।

10.3 शिक्षा के सिद्धांतों से निष्पन्न' शांति एवं सदभाव की शिक्षा'

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में उद्योग द्वार शिक्षा , समवायी शिक्षाऔरशिक्षा में स्वावलम्बन आदि सिद्धांतों से निष्पन्न **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** को यहाँ व्याख्यायित किया गया है।

10.3.1 उद्योग द्वार शिक्षा

महात्मा गांधी ने बताया है, कि उद्योग द्वारा बुद्धि का विकास होना चाहिए। बुद्धि और उद्योग को अलग नहीं समजना चाहिए। बिना उद्योग की शिक्षा से बुद्धि का संपूर्ण विकास होना संभव ही नहीं है।उद्योग के द्वारा बालक अपने परिवार में ही नहीं बलकी समाज के उत्पादक कार्यों में अपना योगदान देकर समाज में ऐसी संवादिता बना पाएगा कि वह समाज में **'शांति एवं सदभाव'** प्रस्थापित करने में उपयोगी बन पाएगा। उद्योग की शिक्षा से बालक में श्रम करने की आदत बनेगी और श्रम के प्रति निष्ठा बढ़ेगी। प्रसिद्ध ग्रंथ गीता में 'योगः कर्मसु कौशलम्' सूत्र से कर्म को योग की संज्ञा दि गई है, उसे चलितार्थ करने के लिए बालक को उद्योग के द्वारा शिक्षा देना आवश्यक है। परिणामतः बालक सिर्फ विद्यालय के लिए ही नहीं बल्कि परिवार, पाडोश, गाँव, समाज, प्रांत, प्रदेश एवं राष्ट्र के लिए उपयोगी बन पाएगा। उतना ही नहीं समाज को मज़दूर-मालिक जैसे वर्ग मे विभाजित करने से बचा पाएगा। याने कि समाज में **'शांति एवं सदभाव'** को प्रस्थापित कर पाएगे।

10.3.2 समवायी शिक्षा

महात्मा गांधी ने समवायी शिक्षण के सिद्धांत में सामाजिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक पर्यावरण का समन्वय करके शिक्षा देने की बात कही है।सामाजिक कार्यों एवं सामुदायिक जीवन-यापन से उनकी सामाजिक चेतना की अभिवृद्धि होती है। सांस्कृतिक कार्य से उनकी रचनात्मक शक्तियों का विकास होता है। उद्योग के कार्यों से बच्चों में आत्मनिर्भरता का विकास होता है। इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने से वालक भावि समाज में **'शांति एवं सदभाव'** को प्रस्थापित कर कर पाएगे।

10.3.3 शिक्षा में स्वावलम्बन

महात्मा गांधी ने स्वावलम्बन के संबंध में लिखा है, कि 'आपको इस निष्ठा से काम करना होगा कि भारतवर्ष के गाँवों की आवश्यक्ताएँ क्या हैं, उसे कैसे पूर्ण की जाए उनके अनुकूलन इस शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए स्वावलम्बी बनना होगा।' नई तालीम की सफलता उसके स्वावलम्बी बनने पर ही आँकी जा सकती है।
नई तालीम का उद्देश्य ही, स्वावलम्बी व्यक्ति तथा स्वावलम्बी समाज पैदा करना है। समाज के लोग आपस में मिल-जुलकर अपने भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यताओं की पूर्ति करे यही स्वावलम्बी शिक्षा का लक्ष्य है। यह **'शांति एवं सदभाव'** का ही एक पर्याय है।

10.4 शिक्षा के अन्य क्षेत्रों से निष्पन्न'शांति एवं सदभाव की शिक्षा

महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में सर्वधर्म समभाव की शिक्षा, प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा, कलाओं की शिक्षा, स्त्री-शिक्षा, सहशिक्षण और छात्रावास एवं समूहजीवन आदि 'शिक्षा के अन्य क्षेत्रों'से निष्पन्न **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** को यहाँ व्याख्यायित किया गया है।

10.4.1 सर्वधर्म समभाव की शिक्षा

गांधी का मत था कि 'बालकों को सभी धर्मों के प्रति समान आदरभाव सीखाना मेरा दृढ़ विचार है, सिर्फ मेरा घर्म, ओर धर्मों से उच्च हैं, अगर बालकों को इस विचार को पढ़ाएँगे तो बालकों के बिच मैत्रिभावना कभी नहीं पनप पाएगी।' बालक को यह सीखाना चाहिए कि सदाचार के मूलभूत सिद्धांत सभी धर्मों में समनहै। उन्हों ने दक्षिणअफ्रिका एवं भारत के शिक्षा के प्रयोगों में बालकों को सर्वधर्म समभाव की शिक्षा देना का प्रयोजन किया था। सभी धर्मों के प्रति समान आदरभाव रखना**'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा का द्योतक है।

10.4.2 प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा

गांधी मानते थें, कि शिक्षा केवल बालकों की शिक्षा तक ही सीमित नहीं है। वह समाज के प्रौढ़ सदस्यों की शिक्षा को भी अवश्यक तथा उपयोगी मानते थे। माताओं, अभिभावकों, कृषि-गोपलन आदि उद्योगकरनेवाले श्रमजीवीओं के लिए दूषणों नाबूदी का शिक्षण , पर्यावरण का शिक्षण , शोषणों का प्रतिकार करनेवाली अहिंसकशक्तियोंका शिक्षण , रचनात्मक कार्यों का

लोकशिक्षण से समाज में **'शांति एवं सदभाव'** प्रस्थापित करने काही यह प्रयास था।

10.4.3 कलाओं की शिक्षा

कलाओं की शिक्षा से गांधी का तात्पर्य था कि बालक आर्थिक उपार्जन करके समाज के लिए उपयोगी बन पाए।जिस में दस्तकारी, गृहउद्योग, ग्रामोद्योग एवं समाज की सांस्कृतिक विरासतों का हस्तांतरण कर सके ऐसी संगीतकला, नृत्यकला, चित्रकला, हस्तकला, मूर्तिकला आदि कलाओं का भी जिक्र किया है। जिससे लोगों एवं समुदायों का एक-दूसरों से मेल-जोल हो सके, ताकी समाज में शांति एवं सामाजिक सदभाव बना रहेगा। यही **'शांति एवं सदभाव'**का सर्वोत्तम पाठ है।

10.4.4 स्त्री-शिक्षा

स्त्री-शिक्षा**से** गांधी का मत था कि 'पारिवारिक गाड़ी के संचालन में स्त्री-पुरुष दो पहिए के स्वरूप है। अतः पारिवारिक समज पैदा करने तथा उत्तरदायित्व निभाने की दृष्टि से दोनों को शिक्षित होना आवश्यक है। बालक की शिक्षा सर्व प्रथम माता की गोद से ही शुरू होती है, इस दृष्टि से उन्हों ने स्त्री-शिक्षाको अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताया है। जन्म के बाद 'शांति एवं सदभाव'की शिक्षा का पहला पाठ बालक अपनी माता से ही सीखता है, इस लिए माता का शिक्षित एवं संस्कारी होना आवश्यक है।शिक्षा से संस्कारों का सिंचन किया जा सकता है। महात्मा गांधी ने 1946 में कस्तूरबा बालिका आश्रम, नई दिल्ली की बालिकाओं से कहा था कि 'मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष के बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्व देता हूँ। संस्कृति बालिकाओं के लिए मुख्य चीज है, जिससे बोलने, बैठने, चलने, कपड़े पहनने और छोटा-सा-छोटा कार्य एवं व्यवहार में अपनी संस्कृति को व्यक्त करना चाहिए। याने बालिकाएँ इस प्रकार की शिक्षा पाकर एक स्वस्थ एवं स्वच्छ समाज का निर्माण कर पाएगी, जो**'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा के पाठ का ही परिणाम होगा।

10.4.5 सहशिक्षण और छात्रावास एवं समूहजीवन

महात्मा गांधी ने बालक के सर्वांगीण विकास हेतु सहशिक्षण को शिक्षा का आवश्यक अंग माना है। उन्हों ने बताया हैं, कि बालिकाओं में पूर्ण स्त्रीत्व का विकास एवं बलक में पूर्ण पुरूषत्व का विकास बिना सहशिक्षण से संभव नहीं है। यहाँ पूर्ण विकस का तात्पर्य हैं, संर्वांगीण विकास और बालक-बालिकाओं का संर्वांगीण विकासवांच्छित सामाजिक विकास को निर्देश करता है। वांच्छित सामाजिक विकास में ही **'शांति एवं सदभाव'**की शिक्षा निहित है। महात्मा गांधी ने अपने शिक्षा-दर्शन मेंसहशिक्षण की तरह छात्रावास एवं समूहजीवन को भी शिक्षा का आवश्यक अंग माना है।बालक पाठशाला में जितना ज्ञान किताबों से प्राप्त करता हैं,उससे भी दुगना ज्ञान छात्रावास एवं समूहजीवन के व्यवहारिक पक्ष से प्राप्त करता है,समूहकार्यों काप्रत्यक्ष अनुभवों से आपने जीवन-यापन की तालीम प्राप्त करके अपने जीवन-व्यवहार में अनुसरण करता है। सहजीवन से बालक एक दूसरों के साथे मानवीय व्यवहार, परस्पर सहयोग, पीड़ितों की सेवा, मैत्रिभाव, कोमी-एखलास, सर्वधर्म समभाव आदि संस्कारों को सीखता है, और जीवन-व्यवहार में अनुसरण करता है। महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में निहित सहशिक्षण और छात्रावास एवं समूहजीवन कीयह तालीम सही अर्थ में **'शांति एवं सदभाव'** की शिक्षा का ही एक पर्याय है।

11.निष्कर्ष

- महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में निहितलोकशाही समाज कानिर्माण, नागरिकता का विकास, नैतिकता एवंचारित्र्य निर्माण, सांस्कृतिक विकास, जीविकोपार्जन एवं आर्थिक उन्नति, मुक्ति औरआत्मविकास एवं आत्मदर्शन आदि बाबतों से**'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निष्पन्न होती है।
- महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन संबंधी संकल्पनाओं में निहितबालक केश्रेष्ठतम तत्त्वों का विकास करना,बालकों की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं उत्तेजित करना, अधिकार एवं कर्तव्यों की सही समज प्राप्त करना,उपयोगी उद्योग के द्वारा बुद्धि का विकास करना, सत्याग्रह एवं स्वाभिमानको उजागर करना, कर्मोसे ही शिक्षा का विकास करना आदि शैक्षिक विचारों से **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निष्पन्न होती है।
- महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में निहित शिक्षा के सिद्धांत जैसे उद्योग द्वार शिक्षा से लोगों का एक-दूसरों से आपसी मेल-जोल , समवायी शिक्षा से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं औद्योगिक पर्यावरण के साथ मेल-जोल करना औरशिक्षा में स्वावलम्बन से समाज उपयोगी उत्पादन्न कार्यों में सहभागी बनना आदि बाबतों से **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'**निष्पन्न होती है।

- महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में निहित 'शिक्षा के अन्य क्षेत्रों'सेलोगों में सर्वधर्म समभाव को प्रस्थापित करना, प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा से सामाजिक जीवन को उजागर करना, समाज की व्यवसायिककलाओं से लगाव रखना, स्त्रीओं कासमाजिक सशक्तिकरण, सहशिक्षण से पूर्ण स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का विकास करना, छात्रावास एवं समूहजीवन से समाजजीवन के कौशलों को उजागर करनाआदि बाबतों से **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'**निष्पन्न होती है।
- महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन मेंनिहित शैक्षिक विचारों जैसे कि संस्कारों का सिंचन, व्यवसायों की तालीम, स्वावलम्बन, व्यवहारिक जीवन, समाज-समुदायों से मेल-जोल, हमारे सनातन मूल्यों सत्य, अहिंस, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, जातमहेनत,अछूतोद्धार, अभय, स्वदेशी, स्वादत्याग, सर्वधर्म समभाव आदि को उजागर करने से **'शांति एवं सदभाव की शिक्षा'** निष्पन्न होती है।

12.फलितार्थ

- वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं आर्थिक समस्याओं का समाधान गांधी के शिक्षा-दर्शन से निष्पन्न 'शांति एवं सदभाव' की शिक्षा से हो पाएगा।
- शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर माहात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन को एक विषय के रूप में स्थाना देना चाहिए।
- सर्वांगी विकास करने हेतु माहात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन से बालकों कोअवगत करना चाहिए।
- सरकार,समाज एवं शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा माहात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन का प्रचार-प्रसार करने का संन्निष्ठ प्रयास करना चाहिए। ताकी समाज में 'शांति एवं सदभाव'प्रस्थापित हो सके।
- समाज में 'शांति एवं सदभाव' प्रस्थापित करने हेतु प्रबुद्ध नागरिकों के द्वारा माहात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन का विवेचन करके जनसमूह के लिए उपलब्ध कराना चाहिए।

संदर्भ

1. गुप्ता, विश्व प्रकाश. (2006).महात्मा गांधी-व्यक्ति और विचार.नई दिल्ही :राधा पब्लिकेशन्स.
2. द्विवेदी, कमला. (1986) .गांधीजी का शिक्षादर्शन . नई दिल्ली : श्री पब्लिशिंग हाउस.
3. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद. (1999). गांधी के शैक्षिक विचार. दिल्ही.
4. सत्यमूर्ति, (1999).महात्मा गांधी का शिक्षादर्शन . दिल्ली : अरुण प्रकाशन.
5. ઉચાટ,દિનેશચંદ્ર એ. (2009). શિક્ષણ અને સામાજિક સંશોધનોમાં સંશોધનનું પદ્ધતિશાસ્ત્ર.રાજકોટ.
6. ગાંધી, મો. ક. (2000). સત્યના પ્રયોગો અથવા આત્મકથા. અમદાવાદ: નવજીવન પ્રકાશન.
7. ઝાકીર હુસેન, (1940). વર્ધાશિક્ષણ યોજના. અમદાવાદ: નવજીવન પ્રકાશન.
8. દવે,જયેન્દ્ર શાસ્ત્રી કે. (1986). ભારતીય ચિંતકોનું શિક્ષણ ચિંતન. અમદાવાદ: યુનિવર્સિટી ગ્રંથનિર્માણ બોર્ડ.
9. પટેલ, મગનભાઈ જો. (સં.). (1999). ગાંધીજીનું શિક્ષણદર્શન- એમના જ શબ્દોમાં. અમદાવાદ:નવજીવન પ્રકાશન મંદિર.